अनुताप

सुकेश साहनी

हिंदी लघुकथा क्षेत्र का सशक्त हस्ताक्षर है, श्री सुकेश साहनी। टूटते सामाजिक मूल्यों पर चिंता, ग्रामीण-संस्कृति का भोला-भाला चित्रण, शहरी सभ्यता के खोखलेपन, निम्न मध्यवर्ग की पीड़ा और निराशा आदि इनकी रचनाओं की विशेषताएं है।

मनुष्य जीवन में कहीं-कहीं जाने-अनजाने गलतियाँ होना स्वाभाविक है। कुछ गलतियाँ ऐसी हैं, जिसका इलाज संभव है, लेकिन बहुत सारी गलतियाँ ऐसी हैं, जिसका इलाज संभव नहीं। मनुष्य के हृदय में सहजीवियों के प्रति संवेदना हैं, वह अपने गलतियों पर ज़रूर पश्चाताप करेगा। सुकेश साहनी का 'अनुताप'इस प्रकार की संवेदना से युक्त लघुकथा है।

सारांश:

एक यात्री दफ़्तर जाने केलिए रिक्शा की प्रतीक्षा में खड़ा है। रोज़ असलम नामक एक रिक्शावाला उसे दफ़्तर पहुँचाता था। उस दिन एक नए रिक्शावाले आया। रिक्शा में चढ़कर बातचीत के बीच उसको मालुम हुआ कि असलम की मृत्यु हुई है।

असलम की मृत्यु की खबर सुनते ही यात्री चौंक पडी। कल भी असलम की रिक्शा में यात्रा किया था। उसकी दोनों गुर्दे खराब थे। डाक्टर ने उसे रिक्शा चलाने से मना कर दिया था।

उसे याद आया कि कल रिक्शा चलाते समय वह एक हाथ से पेट पकडकर धीरे-धीरे कराह रहा था। आगे चढ़ाई ही चढ़ाई था। यात्री तो रिक्शा से उतरने के बारे में भी ज़रा सोचा। लेकिन हमदर्री के अभाव में, अधिक पैसे माँगने का नाटक होगा, ऐसा सोचकर वह रिक्शा से नहीं उतरा।

आज असलम की मृत्यु की खबर सुनकर यात्री पश्चाताप विवश हो गया। डाकघर की चढ़ाई तक आते ही वह होश में आ गया और रिक्शा रोकने को कहा। वह रिक्शे से उतरकर एक अपराधी की तरह रिक्शे के साथ चला।

अनुताप कहानी पढ़ें और उत्तर लिखें।

(1) 'उसे शाक-सा लगा', क्यों?

चार-पाँच दिनों से असलम नामक रिक्शावाला ही यात्री को दफ़्तर पहुँचाता था। उस दिन भी यात्री ने असलम की प्रतीक्षा की तो एक नया रिक्शावाला आया। उसकी रिक्शा में चढ़कर असलम के बारे में पूछा तो उसने बताया कि कल अलसम की मृत्यु हुई है। कल भी असलम की रिक्शा में यात्रा किया था। अचानक उसकी मृत्यु के बारे में सुनकर यात्री शाक-सा लगा।

(2) 'उसे शाक-सा लगा', कौन?

यात्री

(3) असलम की मृत्यु कैसे हुई?

यात्री को दफ्तर पहुँचाकर लौटते समय असलम के पेशाब बंद हो गया था। आस्पताल ले जाते वक्त रास्ते में ही दम तोड़ दिया।

(4) एक सन्नाटे ने उसे अपने आगोश में ले लिया। किसको? क्यों

यात्री को। असलम की मृत्यु के बारे में सुनकर उसे शाक-सा लगा। असलम से अपना व्यवहार के बारे में सोचते वक्त एक सन्नाटे ने उसे आगोश में ले लिया।

(5) कल की घटना उसकी आँखों के सामने सजीव हो उठी। घटना क्या है?

कल असलम की रिक्शा में वह दफ्तर चला था। नटराज टाकीज़ की चढ़ाई पार करके समय वह धीरे-धीरे कराह रहा था, बीच-बीच में हाथ से पेट भी पकड़ लेता था। रिक्शेवाले की दर्द देखकर पहले वह तो रिक्शे से उतरने का निश्चय किया। लेकिन अगले क्षण उसने सोचा कि ये सब उसके नाटक होगा। वह उस रिक्शे में बैठकर दफ़्तर पहुँचा।

DO NOT COPY

(6) कल की घटना उसकी आँखों के सामने सजीव हो उठी। क्यों?

कल असलम की रिक्शा में वह दफ्तर चला था। नटराज टाकीज़ की चढ़ाई पार करके समय वह धीरे-धीरे कराह रहा था, बीच-बीच में हाथ से पेट भी पकड़ लेता था। रिक्शेवाले की दर्द देखकर पहले वह तो रिक्शे से उतरने का निश्चय किया। लेकिन अगले क्षण उसने सोचा कि ये सब उसके नाटक होगा। वह उस रिक्शे में बैठकर दफ़्तर पहुँचा। लेकिन आज जब उस रिक्शेवाले की मृत्यु का खबर सुना तो एक सन्नाटे ने उसे आगोश नेम ले लिया और कल की घटना के बारे में वह सोचा।

(7) 'इनके साथ हमदर्दी जताना बेवकूफी होगी'– यहाँ यात्री का कौन-सा मनोभाव प्रकट हो रहा है?

यात्री असलम की रिक्शा में दफ़्तर जा रहे थे। रिक्शा चलाते-चलाते असलम धीरे-धीरे कराह रहा था। डाक बंगला की चढ़ाई में रिक्शा चलाने में उसका प्रयास देखकर यात्री रिक्शा से उतरने के बारे में सोचा। लेकिन उसने सोचा कि इन लोगों के साथ हमदर्दी जताना बेवकूफी होगी। असलम के प्रति कोई सहानुभूति नहीं प्रकट किया। श्रमजीवियों की पीड़ा और उनके साथ होनेवाले अनादर और उपेक्षा का भाव यहाँ विद्यमान है। आजकल के समाज में श्रमजीवियों के प्रति दया, सहानुभूति आदि संवेदनाएं दिखानेवाले लोगों का अभाव है।

HSSLiVE.IN

(8) 'वह किसी अपराधी की भाँति सिर झुकाकर रिक्शे के साथ-साथ चल रहा था', क्यों?

यात्री असलम की प्रतीक्षा में वह सड़क पहुँचा। लेकिन असलम के स्थान पर एक नया रिक्शावाले आया। असलम के बारे में उससे पूछा तो पता चला कि कल उसकी मृत्यु हुई है। पश्चाताप से विवश यात्री की आँखों के आगे कल की घटना सजीव हो उठी। चढ़ाई में रिक्शा चलाते-चलाते वह कराह रहा था। उसके प्रयास देखकर यात्री ने रिक्शा से उतरने केलिए भी सोचा। लेकिन उसी रिक्शा में बैठकर वह दफ़्तर पहुँचा। वहाँ लौटते वक्त रास्ते में ही उसकी मृत्यु हुई।

असलम की मृत्यु की खबर सुनते ही यात्री अपने हमदर्दी के अभाव के बारे में सोचकर रिक्शा से उतरकर अपराधी की भाँति सिर झुकाए, रिक्शा के साथ-साथ चला।

अनुवर्ती कार्यः

(1) ये प्रसंग किन-किन पात्रों से संबंधित है?

- उसे शाक-सा लगा। — यात्री
- उसकी आवाज़ में गहरी उदासी थी। — रिक्शेवाला
- उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। — असलम
- कल की घटना उसकी आँखों के आगे सजीव हो उठी। — यात्री
- एकबारगी उसकी इच्छा हुई कि रिक्शे से उतर जाए। — यात्री
- किसी कार रे हार्न से चौंककर वह वर्तमान में आ गया। — यात्री
- उसके लिए यह चढ़ाई खास मायने नहीं रखती थी। — रिक्शेवाला
- वह अपराधी की भाँति सिर झुकाकर चल रहा था। — यात्री
- रिक्शेवाला बहुत मज़बूत कदकाठी का था। — नया रिक्शावाला
- कल तो भला चंगा था। — असलम
- एक सन्नाटे ने उसे अपने आगोश में ले लिया। — यात्री
- इनके साथ हमदर्दी जताना बेवकूफी होगी। — यात्री
- वह बुरी तरह हाँफ रहा था। — असलम
- बीच-बीच में एक हाथ से पेट पकड़ लेता था। — असलम
- गंजे सिर पर पसीने की बूँदें दिखाई देने लगी थी। — असलम
- आगे वह कुछ नहीं सुन सका। — यात्री

(अ) ये **कथन** किन-किन पात्रों से संबंधित है?

- **बाबूजी आइए.... मैं पहुँचाए देता हुँ।** — **नया रिक्शावाला**
- **उनके दोनों गुर्दों में खराबी थी।** — **नया रिक्शावाला**
- **आस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही दम तोड़ दिया।** — **नया रिक्शावाला**
- **क्या हुआ उसको?** — यात्री
- **डॉक्टर ने रिक्शा चलाने ले मना कर रखा था।** — **नया रिक्शावाला**
- **असलम अब नहीं आएगा।** — **नया रिक्शावाला**

(2) यात्री का मन संघर्ष से भरा था। वह अपना संघर्ष डायरी में लिख रहा था। वह डायरी लिखें।

- असलम की मृत्यु की खबर - असलम के प्रति अपना व्यवहार - हमदर्दी का अभाव - पश्चाताप से उत्पन्न अनुताप

HSSLIVE.IN

15.7.2015 बुधवार

आज....मैं क्या लिखूँ? कैसे लिखूँ?

सबेरे घर से निकलाकर रोज़ की तरह असलम की प्रतीक्षा किया। लेकिन एक नया रिक्शावाला आया। उसमें बैठना उतना आराम नहीं है। असलम कितनी सावधानी से रिक्शा चलाता है। उसको क्या हुआ? किससे पूछूँ?

नए रिक्शेवाले से असलम के बारे में पूछा। लेकिन उत्तर सुनकर मुझे शाक-सा लगा। कल असलम की मृत्यु हुई थी। विश्वास नहीं आती। आगे की बातें....मैं सुन नहीं सका। कल भी मैं ने उसकी रिक्शा में चला था।

कल मैं ने क्या किया? उसकी कराह देखकर रिक्शा से उतरने के बारे में भी सोचा था। लेकिन दूसरे क्षण में मेरा दिमाग खराब हो गया। मैं ने सोचा यह उसका नाटक होगा। ऐसे लोगों के साथ हमदर्दी जताने से क्या फ़ायदा है? शायद उसकी मृत्यु इतनी जल्दी होने का कारण मैं हूँगा। मेरी हमदर्दी का अभाव! यदि मैं ज़रा सहानुभूति दिखाता तो.....आज भी वह हमारे साथ होता.....। उसका चेहरा, दयनीय आँखें.... कैसे भूलूँ?

पश्चाताप से भरे मन से मैं रिक्शा से उतरा। अपराध बोध से मेरा मन भर उठा है। नटराज टाकीज़ से डाक बंगले तक की चढ़ाई....मैं ने टहलकर पार किया। मन की बोझ दूर होने की प्रतीक्षा में.....। यदि मनुष्य में अपने सहजीवियों के प्रति सहानुभूति है तो कितना अच्छा होगा।

(3) नीचे दिए मुद्दों के आधार पर अनुताप शीर्षक की सार्थकता पर अपना विचार प्रकट करें-

- पाठ के केंद्र-भाव को सूचित करता है - चरमसीमा तक पढ़ने को प्रेरित करता है - संक्षिप्त, पर स्पष्ट है - सार्थक एवं संगत है।

हिंदी लघुकथा क्षेत्र का सशक्त हस्ताक्षर है - श्री सुकेश साहनी। श्रमजीवियों की पीड़ा और बेबसी पर लिखी गई लघुकथा है 'अनुताप'। 'अनुताप' का शाब्दिक अर्थ है- हमदर्दी जताना या दूसरों का दुःख अपना समझकर, दुःख के अवसर पर दूसरों के साथ रहना। कहानी का मुख्य पात्र है-असलम, यात्री और नया रिक्शावाला। यात्री रोज़ असलम की रिक्शा में दफ्तर पहुँचता था। लेकिन एक दिन जब वह रिक्शा चलाने में असमर्थ रहा तो यात्री को ज़रा दुःख हुआ। लेकिन बाद में वह सोचता है कि शायद यह उसका नाटक होगा। वह रिक्शा से नहीं उतरा। उसने कठिन प्रयत्न करके रिक्शा चलाया।

बाद में असलम की मृत्यु की खबर सुनकर यात्री के मन में पश्चाताप विवश हो गया। वास्तव में असलम की दयनीय स्थिति पाठक में सहानुभूति जागृत करती है और चरमसीमा तक पढ़ने को प्रेरित देती है।

गलतियाँ मनुष्य सहज है। ज़िंदगी में जाने-अनजाने गलतियाँ होती है। कुछ तो ऐसी है जिसका सुधार आसानी से संभव है, लेकिन कुछ का कोई इलाज संभव नहीं। मनुष्य के हृदय में जब सहजीवियों के प्रति संवेदना है, वह ऐसी हालत में पश्चाताप-विवश बन जाएगा। कहानी में असलम की मृत्यु की खबर सुनते ही यात्री पश्चाताप-विवश होते है। अतः 'अनुताप' कहानी का शीर्षक असली संवेदना से युक्त है और सार्थक भी।

जीवन-वृत्त पढें।

नाम	: सुकेश साहनी
जन्म	: 5 सितंबर 1956, लखनऊ
रचनाएँ	: उठे हुए लोग, ठंड़ी रजाई
विशेषताएँ	: हिंदी लघुकथा साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर टूटते सामाजिक मूल्यों पर गहरा आस्था रखनेवाला
पुरस्कार	: डॉ परमेश्वर गोयाल लघुकथा सम्मान माता शरबती देवी पुरस्कार

HSSLIVE.IN

सुकेश साहनी के बारे में एक अनुच्छेद तैयार करें।

हिंदी लघुकथा साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर सुकेश साहनी का जन्म 5 सितंबर 1956 को लखनऊ में हुआ। वे टूटते सामाजिक मूल्यों पर गहरा आस्था रखते है। उठे हुए लोग और ठंड़ी रजाई आदि उनकी रचनाएँ है। वे डॉ परमेश्वर गोयाल लघुकथा सम्मान, माता शरबती देवी पुरस्कार आदि से सम्मानित हैं।

परीक्षा की तैयारी केलिए:-

(1) "उसकी आवाज़ में गहरी उदासी थी"- किसकी आवाज़ में? क्यों?

(2) असलम की मृत्यु के बारे में नया रिक्शावाला यात्री से बताते है। उन दोनों के बीच के वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(3) रिक्शा नटराज टाकीज़ पार कर बडे कारखाने की ओर जा रहा था। रिक्शा चलाते हुए असलम धीरे-धीरे कराह रहा था। उस समय असलम और यात्री के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

यात्री : असलम, क्या हुआ?
असलम : जी, पेट में ज़रा दर्द है।
.....

(4) यात्री घर जाकर अपनी पत्नी से असलम की मृत्यु, उसके प्रति अपना व्यवहार आदि के बारे में कहते हैं। यात्री और पत्नी के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(5) यात्री अपने मित्र के साथ असलम के घर जाते है। घर पहुँचकर वह अपनी डायरी में असलम की घर की अवस्था लिखते है। यात्री की डायरी का वह पन्ना कल्पना करके लिखें।

(6) असलम की घर की अवस्था समझकर यात्री उनकी सहायता करने केलिए फिर अपने पत्नी को लेकर जाता है। उस अवसर पर यात्री की पत्नी और असलम की पत्नी के बीच का संभावित वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(7) असलम की मृत्यु के बाद कई साल बीत गए। बीच-बीच में यात्री के मन में उसकी स्मृति जाग उठती है, और अब भी वह अपने व्यवहार में दुःखी है। अपने आत्मकथा लिखते वक्त वह अपनी अनुभवों का भी जिक्र करते है। वह आत्मकथांश तैयार करें।

- असलम के प्रति अपना व्यवहार
- हमदर्दी का अभाव
- पश्चाताप से उत्पन्न अनुताप

(8) आज घर से निकलते वक्त रास्ते में एक छोटे बच्चे को देखा, जो सड़क के किनारे पर पड़े कूड़े-कचरों से कुछ लेकर खाते है। ऐसे अवसर पर आप क्या करेगा? उस दिन की डायरी के रूप में लिखें।

DO NOT COPY